जयवंतसूरिकृत

बार भावना सज्झाय

- संपा. जयंत कोठारी

कविपरिचय

जयवंतसूरि (अपरनाम गुणसौभाग्यसूरि)ए वडतपगच्छनी रत्नाकर शाखाना उपाध्याय विनयमंडनना शिष्य हता. एमनी बे रासकृतिओ 'शृंगारमंजरी' अने 'ऋषिदत्ता रास' अनुक्रमे १५५८(वि.सं.१६१४) अने १५८७(वि.सं. १६४३)नां रचनावर्षो बतावे छे अने १५९६(वि.सं.१६५२)मां एमणे 'काव्यप्रकाश'नी टीकानी हस्तप्रत लखावीने ज्ञानभंडारमां मुकाव्यानी माहिती मळे छे एटले कविनो समय सोळमी सदीनो गणाय - सोळमी सदीना बीजा चरणथी कदाच सत्तरमी सदीनां थोडां वर्षो सुधीनो.

जयवंतसूरिने नामे बे रासकृतिओ उपरांत स्तवन, लेख(पत्र), संवाद, फाग, बारमासा वगेरे प्रकारनी कृतिओ अने ८० जेटलां गीतो मळे छे. अनेकविध भावछटाओ अने अभिव्यक्तिरहोथी ओपती एमनी काव्यसृष्टि एमनी विदग्धता अने एमना उच्च कवित्वनी प्रतीति करावे छे. (विशेष माटे जुओ मध्यकालीन गुजराती जैन साहित्य, संपा. जयंत कोठारी, कांतिभाई बी. शाह, १९९३ तथा कविलोकमां, जयंत कोठारी, १९९४ - 'पंडित, रसज्ञ अने सर्जक कवि जयवंतसूरि' ए लेख.)

कृतिपरिचय

'बार भावना सज्झाय' ढाळ अने त्रोटकना पद्यबंधमां रचायेली ३९ कडीनी रचना छे. ३९ कडी कहेवाथी समजाय एना करतां एनुं परिमाण मोटुं छे केमके पंदरेक कडीओ ढाळ अने त्रोटकना विभागो धरावे छे अने ६थी ८ पंक्ति सुधी विस्तरे छे. बेएक अन्य कडीओ पण चार पंक्ति सुधी विस्तरे छे. ढाळ अने त्रोटकना विभागो वच्चे शब्दसांकळी छे. कृतिनो विशिष्ट पद्यबंध अने त्रोटकना प्रयोगथी आवती गानछटा ध्यानार्ह छे.

आ कृति जयवंतसूरिनी एकमात्र एवी कृति छे जे संपूर्णपणे सांप्रदायिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयवस्तुनी छे अने जेमां एमना कवित्वने विलसवानो खास कशो अवकाश मळ्यो नथी. (थोडां गीतो पण आवां मळे छे खरां.) कृतिमां जैन परंपरामां खूब जाणीती, मोक्षमार्गना साधनरूप बार भावनाओ वर्णवायेली छे. भावना एटले जेनुं चिंतन-पर्यालोचन करवुं जोईए एवा तात्त्विक पदार्थो - देहादिनी अनित्यता वगेरे. अनित्यभावनाने संदर्भे रावणनां समृद्धि अने प्रतापनुं तथा संसारनी - भवभ्रमणनी असारताने संदर्भे नरकनां दुःखोनुं वीगते वर्णन दाखल थयुं छे, परंतु आ वर्णनो केवळ परंपरागत छे. तत्त्वविचारना निरूपणमां अभिव्यक्तिनी कशी ताजगी के नूतनता आणवानुं कविए इच्छ्युं नथी.

प्रतपरिचय

आ कृतिनी ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरनी क्र. ६६८०नी एकमात्र प्रत मळी छे. बीजी कोई प्रत जाणवा मळी नथी. प्रतनां चार पत्र छे. पत्रनुं माप २१X१० से. मि. छे. पत्रनी दरेक बाजुए १३ लीटी छे. छेल्ला पत्रनी बीजी बाजुए चार लीटी छे. दरेक लीटीमां आशरे ३७ अक्षर छे. प्रतना अक्षर मोटा, चोखखा अने सुघड छे. प्रत घणी शुद्ध रीते लखायेली छे. पडिमात्रानो उपयोग थयो छे अने 'ख'ने माटे 'ष' वपरायो छे. लहियानुं नाम नथी, लेखनसंवत पण नथी, पण प्रत संवत सत्तरमी सदीनी ज होवानुं अनुमान थई शके छे.

बार भावना सज्झाय

पुरीयां मनिहिं विमासइ - ए ढाल

सरसति सरस ति वाणी, आपु अमीअ समाणी,
भावन बार वखाणी, बूझवुं भवीअण प्राणी. १
दुर्लभ मानव-जंवारु, भवीअण, ए लही सारु,
भोलिमि, भोलडा, म हारु, आप-सवारथ सारु. २
माया ममता ऊतारु, मन उनमारगि वारु,
वाणी-अमी अवधारु, भावन बार संभारु. ३
भावन मुगति-निधान, श्रीजिनशासनि प्रधान,
ते सुण थई सावधान, छंडी कुमत अज्ञान. ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शासनदेवी-पय पणमेवीअ - ए ढाल

भवीअण प्राणीअ, भावन आणीअ,
पहिलीअ अनित्यता भाविवी ए,
जगि जि सुहुणडा समवडि, साजन,
घडीअ नव हिंडतां जाणिवी ए.

त्रूटक

जाणीवी माया मायताया, अथिर काया ए सही,
ए मित्र पुत्र कलत्र भाई, थिर सगाई को नहीं,
यौवन्नि मातु विषयि रतु, फोक ममता वाहीइ,
जे जीव पाहिं सुजन वाहाला, नेहि छेहु ते दीइ. ५
जोअण लंक शत अधिक चुरासीअ,
ऊंचमि गाउ सत गढ रखइ ए,
त्रणि सहिस चुपन पोलि स-बारीअ,
शत दुनि कोठडा एक लख ए.

त्रूटक

एक लक्ष त्र्यासी सहिस कोठा, बुरुज छप्पन हवि सुणु,
चु कोडि लख उगणच्यालीस कोडी, सहिस चु कोडि शत भणउ,
त्रिपन्न कोडी लक्ष बारे सहिस पंचास कोसीस ए,
चु सहिस छणुं सुभट सूरा, कोसीसइ एक निवसए,
इम सर्व संख्या सुभट कहीइ, अढार कोडाकोडि शती,
सोवित्र गढ दृढ जलधि खाई, लंकनगरी जसवती. ६
रावण भूपति, लंकनु अधिपति,
सुरपति जस सुति जींपीउ ए,
एक लख पंचवीस, सहिस सुत बत्रीस,
जोअण परिषदि दीपतु ए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रूटक

दीपतु त्रिभुवनमांहि कंटक, खाटि बांध्या नव ग्रहे,
विहि दलइ कोद्रव, अग्नि धोइ वस्त्र, वायु बाहारइ ग्रहे,
यम वहइ जस घरि नीर निरमल, छए रितु नितु वनि वसइ,
एक हाथि पर्वत जेणि तोल्यु, भुवनि भुजबलि उहलसइ,
ते नित्य न रहिउ भूप रावण, मुंज भोज गया सही,
तु अथिर काया मूढ माया, अनित्य भावन ए कही. ७

बाहुबलिनी वेलिनी ढाल

अशरण बीजी भावना, शरण नहीं जगि कोइ जी,
मातपिता बांधव वली, हय गय पावक जोय जी.

त्रूटक

नहीं शरण मरण जनम रोगिइं, सुजन, राणिम रिधि छतां,
रिधि अनाथी थयु सनाथी, एह भावन भावतां,
एक धर्म अशरण-शरण परभवि, सुजन, संबल आदरु,
ए धरु भावन चित्ति पावन, अलवि भवसायर तरु. ८

ढाल एकवीसानी

आविउ आविउ रे संसारिइं जीव एकलु,
वली प्राणी रे पाप करी ज[जा]सइ एकलु,
को कहिनु रे नहीं संघाती जाणीइ,
कुण वइरी रे बंधव कवण वखाणीइ.

त्रूटक

वखाणीइ कुण स्वार्थि वाहालां, मिलइ सज्जन अतिघणां,
जे विना न सरइ एक घडली, जनम जाइ ते विना,
कुटंब कारणि पापभारइ जीव वेइ एकलु,
एकत्वभावन भावतां नमिराय बूझिउ गुणनिलु. ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोइ वारु रे मेघरथ राय - ए ढाल

चुथी भावन भावीइ, अन्य सहू जगमाहिं रे,
तनु धन सुजन अनेरडा, परलोकइं रे नहीं कोइ सहाय कि. १०
भवीअणजी, इम भावु रे, जिम पामु रे मुगतिनिवास,
जिणि छूटु रे भवभयपास. आंचली
जनमि जनमि पाम्यां घणां, मातपिता सुत भाई रे,
तरूअरथी जिम जूजूआं, प्रहि ऊगइं रे पंखीडां सवि थाय कि.
११ भ०
एणइं संसारि संयोगडा, सुहुणा सरिसा जाणि रे,
अति संयोगवियोगनइं मनि माया रे अलीअ म आणि कि.
१२ भ०
घडीअ न लागइ वहिडतां, जिम कातीना मेह रे,
तनु धन सुजन अनेरडां, ते साथइं रे मंडि म चिंतसनेह कि.
१३ भ०
अन्यत्यभावन भावतां, सनतकुमार वइरागी रे,
घर पुर अंतेउर त्यज्यां, इम मेहलु रे ममतानु तुहमे भाग कि.
१४ भ०

एक दिनि सारथपति भणइ - ए ढाल

भावन भावु पंचमी, ए संसार असार,
चु गइ मांहिं भमंतडां, सुखदुख सह्यां अपार, रे. १५
भावन भावीइ, आणी आणी हि[य]डइ विरागो रे,
साधु मुगतिनु मागो रे, छंडी छंडी भव तणउ रागो रे.
बूझउ बूझउ प्राणीआ, परिहरी ममता नइ मोहो रेत,
मंडु मंडु धरम-स्युं नेहो रे, जाणी जाणी अथिर स देहो रे.भा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरया गति अति जीवडु, वेइ दुख असाय,
संकड कुंभी ऊपनु, तलि शिर ऊपरि पायो रे. १६ भा०
पीडइ पाप पचारतां, परमाधामी अपार,
सांडसइ त्रोडइ, तेलि तलइ, दिइ वली मोगर-प्रहारो रे. १७ भा०
पारानी परि वली मिलिइ, कीध स खंडोखंडि,
सुख एक मेषोन्मेष नहीं, नवि मेहलइ टलवलतां रे. १८ भा०
झडपइ आमिष पिंडनइं, समलीरूप करेवि,
चांच जिसी हुइ भालडी, तन वींधइ ततखेवो रे. १९ भा०
वज्रमुखरूपी कंथूआ, वेदन करइ शरीर,
माहोमांहि आयुधि हणइ, मुखि मुंकइ अति रीरो रे. २० भा०
माहा माझिम निसि जल वडइ, छांटी वींजइ रे वाय,
अनंत गुणी शीत-वेदना, तेहथी नरकि सहायो रे. २१ भा०
तावडि तापिउ टलवलइ, वंछि वनतरु वाय,
सामलि असिवनि रखीउ, ते दुख मिइं न कहायो रे. २२ भा०
करवतधारा पानडां, पडि पडि खंडइ देह,
समलीरूपइं ठणक दिइ, ते दुखनु नहीं छेहो रे. २३ भा०
भार भरी ऊतारीइ, वइतरणीनइ मांहि,
मत्स्य भखइ वली देह गलइ, पगि गोखरू वींधायो रे. २४ भा०
अगनिवर्ण करी पूतली, दिइ आलिंगन देहि,
तातां तरूआं पाईइ, कही न सकुं दुख एहो रे. २५ भा०
दसविध वेदनदुख सह्यां, जे मिइं नरक मझारि,
कोडि जीभ कहइ केवली, तुहि न आवइ पारो रे. २६ भा०
इम तिरीआं गति मानवी, देठ तणी गति मांहि,
परि परि जे दुख मिं सह्यां, ते वली कह्यां न जायो रे. २७ भा०
इम भवभावन भावतां, जे विरमइ संसारि,
ते पुप्फचूलानी परइं, पामइ पामइ भव तणउ पारो रे. २८ भा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल

अस्थिर काया हो प्राणी ए खरी,
वहइ नव द्वारइं हो मलमूत्रइं भरी.

त्रूटक

मलमूत्रि भारी, अतिअ सारी, रुधिर वीर्य थकी घडी,
आहार-जल मल-मूत्र थाइ, शुचि न थाइ देहडी,
वाधी अमा मुख अशुचि अन्नइं, नुहि किमहिइं निर्मली,
ए अशुचि साते धाति बांधी, ऊपरि चरमह कोथली.
आभरणि सोहइ सहु मोहइ, अशुचिभावन भावतां,
श्रीभरत भूपति लहिउं केवल, आरीसइ मुख जोयतां. २९

सिरि संति जिणेसर - ए ढाल

हवि सातमि भावन, लोकसरूप अपार,
सुर नर पातालइं, त्रिभुवन तणउ रे विचार.
एक पुण्यसंयोगइं, सुख वेइ सुरलोकि,
एक मानवनी गति, नरकि सहइ दुख एक.

त्रूटक

एक थाइ माता वली वनिता, तात सुत वली सुत पिता,
कुबेरदत्त कुबेरदत्ता, कुबेरसेना अति मता,
ए लोकभावन जीवभावन, जेह ध्याइ एकमनां,
वैराग्यरंगइं चित्त चंगइं, नुहि भवभय आसना. ३०

जय जगगुरुनी ढाल

अट्ठमि भावन भावतां, मनि आश्रव रूंधु,
वइरी विषयादिक सबल, ते चित्ति म बंधु.
राग रोस परिहरु दूरि, हिंसादिक टालु,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आश्रव-परवसिपणइ दुःख, मृगापुत्र संभालु.
एक मोकलडइ छिद्रि जिम, प्रवहण बूडइ तोइ,
तिम आश्रवथी प्राणीउ, भवसायरि बूडेइ. ३१

ढाल वेलिनी

नुमी भावन भावतां, आश्रव तिजउ सदैव,
मन वचने काया करी, संवर करि रे जीव.

त्रूटक

संवर करि रे जीव संसारि, विषयादिक वली वारि,
क्रोध क्षमाइं मान जि विनयइं, माया सरलइं वारि,
लोभ संतोषइं टाली, चारित्र पाली जिनवर-आण,
संवर आणी प्रसन्नचंद्रादिक पुहुता मुगति निदानि. ३२

ढाल

दशमीय दशमीय भावन भावीइ ए,
निरजरा निरजरा तपह प्रमाणि कि,
बाह्य अभ्यंतर बि परइं ए,
अणसण ऊणोदरीअ वखाणि कि.

त्रूटक

अणसण ऊणोदरी जाणी, वृत्तिसंखेप संलीनता,
रसत्याग कायाक्लेश बाहिरि-भेद छ ए गुणवता,
प्रायश्चित्त कासग ध्यान विनइं, वैयावृत्य सझाय-स्युं,
ए भेद आभ्यंतरिक, निर्जर भावि भावन भाव-स्युं. ३३

गुरु गिरुआ गुणसागर - ए ढाल

उत्तम भावन भावतां, उत्तम गुण संभारि,
चारित्र निरमल आदरी, पुहुता मुगति मझारि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारीनइ बूडा नही, तारू हूआ तारुन्नि,
इंद्रिय-हय जीपी करी, आणी निजवसि मन्न. ३४
जंबूकुमर तणी परि, छंडी सोविन नारि,
आप सवारथ साधीअ, जे रह्या सिद्धिदूआरि
उत्तम भावन भावतां, प्राणी तरइ संसारि,
जनम-जरा-भवभय थकी, पामइ ते नर पार. ३५

गिरिवर मांहिं मेरु वडु रे - ए ढाल

बोधिभावन हवि भावीइ रे, दुर्लभ ते जगि होइ,
चक्रवर्त्तिपदवी सोहिली रे, सोहिलां सुरसुख होइ.

त्रूटक

सोहिलां सुरसुख होइ, प्राणी, लक्ष वार स पामीइ,
एक धर्म दोहिलु वली भवि भवि दुःख जेहथी वामीइ,
संसारमांहिं अनंत पुद्गलपरावर्त्तिइं भवि भमइ,
मिथ्यात्व मोहिउ, पाप वाहिउ, धर्म-अक्षर नवि गमइ. ३६

[ढाल]

जिम नइ-पाहाण तणी परिइं रे, यथाप्रवृतिकरणेण,
कोडाकोडि एक थाकतां रे, आठइ करम तणेण.

त्रूटक

आठइ कर्म तणी गति, कोडाकोडि एकेकी जव रहइ,
ए चौद अंतरग्रंथि भेदक समय जिनवर तव कहइ,
जे रागदोषप्रणाम[प्रमाण]सरूपी ग्रंथि ते अणभेदतइ,
नवि लहइ प्राणी शुद्ध समकित, ग्रंथि दृढ पोतइ छतइ. ३७

[ढाल]

पर्वतनी परि भेदवा रे, को लघुकरमी होइ,
भेदइ अपूरवकरणडइ रे, अनिवृतिकरण स जोइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रूटक

अनिवृतिकरणि स जोई प्राणी, सूझतु खिणि खिणि घणउं,
उदीर्ण मिच्छत्तक्षइं घाती, अनुदीर्ण उपशमावी घणउं,
इम लहइ समकित पंच भेदिइं, क्षायिकादिक अति भलां,
दस भेद वली निसर्ग आदिक लहइ प्राणी निर्मलां. ३८

[ढाल]

बोधिभावन बारमी ए, भावइ जेह महंत,
ते नर निरमल संपजइ रे, पामइ सुक्ख अनंत.

त्रूटक

पामइ सुक्ख अनतं प्राणी, भावन बार वखाणी,
एकमनां जे भावन भावइ, ते सुख आणइ ताणी,
वड तपगछि अति महिमामंदिर, **श्रीविनयमंडन उवझाय**,
तस सीस **जयवंत पंडित** वीनवइ, सुखसंपद थिर थाइ. ३९

इति श्री १२ भावना सज्झाय समाप्तः. श्री. श्री. श्री. श्री.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दार्थ

(मध्यकालीन अने केटलाक पारिभाषिक शब्दोनो समावेश कर्यो छे. कडी अने पंक्तिक्रमांकनो निर्देश छे.)

अगनिवर्ण २५.१ अग्निना वर्णनुं, रतुंचोळ, तपेलुं

अट्ठमि ३१.१ आठमी (सं.अष्टमी)

अथिर ७.१० अस्थिर

अनिवृत्तिकरण ३८.२ अपूर्वकरणरूप परिणाम पाछुं जाय नहीं तेवी अवस्था (सं.अनिवृत्तिकरण)

अनुदीर्ण ३८.४ उदय न पामेल अथवा जेनो उदय दूर छे ते (सं.)

अनेरडां १३.२ जुदेरां (सं.अन्यतर)

अपूरवकरणडउ ३८.२ पूर्वे क्यारेय प्राप्त न थयेला एवा आत्माना शुभ परिणामनी प्राप्ति (सं.अपूर्वकरण)

अमा २९.५ अमाप, खूब (सं.)

अमीय १.१ अमृत

अलवि ८.६ सहेजमां, अनायासे

अलीय १२.२ मिथ्या, खोटुं (सं.अलीक)

असाय १६.४ अशातावेदनीय कर्मनो एक प्रकार, शारीरिक-मानसिक पीडा

असिवन २२.२ तरवारना आकारनां पांदडांवाळां वृक्षोनुं वन (सं.)

अंतेउर १४.२ अंतःपुर, राणीवास, राणीओ

आदर- ८.५ स्वीकारवुं, आश्रय लेवो (सं.आ+दृ)

आप २.२ आत्मा

आमिष १९.१ मांस (सं.)

आरीसइ २९.२ अरीसामां (सं.आदर्श)

आश्रव ३१.१ जे द्वारा कर्मो आवे छे ते, कर्मबंधनां कारण (सं.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसना ३०.८ पासे रहेला (सं.आसन्न)

उदीर्ण ३८.४ उदय पामेल (सं.)

उन्मारग ३.१ अवळो - खोटो मार्ग

उपशमाव- ३८.४ शांत करवुं

उवझाय ३९.५ उपाध्याय, जैन साधुनी एक पदवी

उह्लस- ७.८ शोभवुं, प्रकाशवुं (सं.उल्लस्)

ऊंचम ६.२ ऊंचाई (सं.उच्च परथी)

एकमनां ३९.४ एक चित्ते

करणेण ३१.१ करवाथी (सं.)

कवण ९.४ कोण (सं.कः पुनः)

कहि ९.३ कोई

कंथूआ २०.१ एक नानकडुं जीवडुं (सं.कुंथु)

काती १३.१ कारतक महिनो (सं.कार्तिक)

कासग ३३.७ काउसग्ग, देहथी पर थवुं ते, एक जैन ध्यानक्रिया (सं.कार्योत्सर्ग)

किमहिइं २९.५ केमेय

कुंभी १६.६ घडाना आकारनी नाना कोटडी, जेमां नरकना जीवोने पकववामां आवे छे (सं.)

कोडाकोडि ३७.२ करोडने करोडथी गुणवाथी थती संख्या

कोडि, कोडी ६.६, ८ करोड (सं.कोटि)

कोद्रव ७.६ कोदरा, एक हलकुं धान्य (सं.)

कोसीस ६.७ कोसीसां, कोटनां कांगरां (सं.कपिशीर्षक)

क्षइं ३८.४ क्षयथी, नाशथी

क्षायिक ३८.५ कर्मनाशथी उत्पन्न थयेल, सम्यक्त्वनो एक प्रकार (सं.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंड- २३.१ टुकडा करवा (सं.)

खंडोखंडि १८.१ टुकडेटुकडा

खिण ३८.३ क्षण

गइ १५.२ गति, जीवयोनि

गय ८.२ गज, हाथी

ग्रह ७.६ गृह, घर

घडली ९.६ घडी, चोवीस मिनिटनो समय, अल्प समय (सं.घटिका)

घाती ३८.४ आत्माना गुणोनो नाश करनार (सं.)

चित १३.२ चित्त

चु ६.६ चार (सं.चतुः)

चुपन ६.३ चोपन (सं.चतुःपंचाशत्)

छत्इ ३७.६ होतां

छंड- १६.२ छांडवुं, छोडवुं (सं.छर्द)

जव ३७.३ ज्यारे

जंवारु २.१ जन्मारो (सं.जन्म+कार के वार)

जीप- ७.२ जीतवुं (सं.जि-, प्रा.जित्त, जिप्प)

जूजूआं ११.२ जुदां, अळगां

जोअण ७.४ जोजन, तेर किलोमिटर जेटलुं अंतर (सं.योजन)

ठणक २३.२ चांचनो प्रहार, धोंकवुं ते

ततखेव(वो) १९.२ तत्क्षण, तरत ज (सं.तत्+क्षिप्)

तरूआं २५.२ कलाई, टीन (सं.त्रपुक)

तव ३७.४ त्यारे

तस ३९.६ तेनुं (सं.तस्य)

तातां २५.२ तप्त, तपेलां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताय ५.५ तात. पिता

तावड २२.१ ताप

तिज- ३२.१ तजवुं (सं.त्यज्)

तिरीआं २७.१ तिर्यंच, पशुपंखी, जीवजंतु आदि प्राणीवर्ग

तुहि २६.२ तोपण

तोइ ३१.५ पाणीमां (सं.तोय)

त्रिपन्न ६.७ त्रेपन (सं.त्रिपंचाशत्)

थाकतां ३७.३ बाकी रहेतां, बचतां

थिर ३९.६ स्थिर

दुनिं ६.४ बमणुं, बे

दूआर ३५.२ द्वार

देठ २७.१ घृणित, नारकी ? (सं.द्विष्ट ?)

दोष ३७.५ द्वेष (प्रा.)

दोहिलु ३६.४ करवुं के मेळववुं मुश्केल (सं.दुःख+इल्ल)

नइ २४.१, ३४.४, ३७.१ नदी

निरजरा ३३.२ कर्मो खरी जवां ते, कर्मोनो नाश थवो ते (सं.निर्जरा)

निरया १६.५ नारकी, नरकनी (प्रा.निरय)

निलु ९.८ निवास, वासस्थान (सं.निलय)

निसर्ग ३८.६ स्वाभाविकपणे थवुं ते, सम्यक्त्वनो एक प्रकार (सं.)

नुमी ३२.१ नवमी

नुहि २९.५ न होय

नेटि ५.८ नक्की, जरूर

पचार- १७.१ महेणां मारवां, टोणां मारवां, ठपको आपवो (अप. पच्चार)

परमाधामी १७.१ नरकवासीओने शिक्षा करनार देवयोनि (सं.परम+अधार्मिक)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परि १८.१ पेठे, जेम (सं.प्रकारे)

पंचास ६.७ पचास (सं.पंचाशत्)

पाय(यो) १६.६ पाक, अग्निथी पकववुं ते

पायक ८.२ पगपाळा सैनिक

पास ११.आंचली पाश, बंधन

पाहाण ३७.१ पथ्थर (सं.पाषाण)

पाहिं ५.८ -ना करतां (सं.पार्श्वे)

पुद्गलपरावर्त्त ३६.५ जीव बधां कर्मपुद्गलोने स्पर्शी रहे तेटलो काळ, काळनुं एक मोटुं माप (सं.)

पुहुता ३२.६ पहोंच्या (सं.प्रभूत, प्रा.पहुत्त)

पोत ३७.६ भंडार, सिलक

पोलि ६.३ दरवाजो (सं.प्रतोलि)

प्रमाण ३७.५ परिमाण, जथ्थो (सं.)

प्रवहण ३१.५ वहाण (सं.)

प्रह ११.२ प्रभात, सवार

बंध- ३१.२ बांधवुं, जोडवुं (सं.बध्)

बाहार- ७.६ वाळवुं, झाडु काढवुं (दे.बोहारी परथी)

बाहारि ३३.६ बहारनो, बाह्य (सं.बहिर्)

बुरुज ६.५ बुरज, किल्लाने मथाळे तोप गोठववा माटेनुं अगाशी जेवुं गोळाकार बांधकाम (अ.बुर्ज)

बूझ- ९.८ समजवुं, ज्ञान पामवुं; समजाववुं, ज्ञान आपवुं, बोध करवो (सं. बुध्य-)

बोधि ३६.१ आत्मज्ञान, सम्यग्दर्शन

भख- २४.२ भक्ष करवो, खावुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवीअण १.२ भविजन, मोक्षनो अधिकारी जीव

भल्लडी १९.२ नानो भालो (सं.भल्ल)

भाव- ५.१ चिंतन करवुं (सं.भावय्)

भावन १.२ चिंतन, पर्यालोचन, तेना विषयरूप तत्त्वसिद्धांत (सं.)

भोलिम २.२ भोळपण (दे.भोलउ परथी)

मझारि १६.१ मध्ये, -मां (सं.मध्य+कार)

महंत ३९.१ उत्तम, श्रेष्ठ, मोटुं (सं.महान्त)

माग १६.२ मार्ग, रस्तो

माझिम २१.१ मध्य (सं.मध्यम)

माय ५.३ माता

माया ३२.३ कपट (सं.)

माहा २१.१ महा महिनो (सं.माघ)

मिच्छत्त ३८.४ मिथ्यात्व, सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा

मिल १८.१ मेळववुं, मिश्रित करवुं, मसळवुं ? (सं.)

मेषोन्मेष १८.२ आंखना पलकारा

मोकलडउ ३१.५ मोकळुं, खुल्लुं (सं.मुक्त, दे.मोकल्ल)

मोगर १७.२ हथोडाना प्रकारनुं एक शस्त्र (सं.मुद्गर)

यथाप्रवृत्तिकरण ३७.१ अनादिथी चालती प्रवृत्ति तेमनी तेम रहीने जीवमां शुभ परिणाम प्रवर्तवुं ते

रणिम ८.३ राजत्व, राजपद

रितु ७.७ ऋतु

रिषि ८.४ ऋषि

रीर(रो) २०.२ चीस, आक्रंद

लघुकरमी ३८.१ थोडां कर्म बाकी रह्यां छे तेवो जीव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लह- २९.८ मेळववुं, पामवुं

वखाण- ९.४ कहेवुं (सं.व्याख्यान परथी)

वहिड- १३.१ विघटित थवुं, नष्ट थवुं

वाम- ३६.४ दूर करवुं (सं.वामय्)

वाह- ५.७ वहन करवुं; ३६.६ खेंचवुं, खेंचावुं (सं.वाहय्)

विनइं ३३.७ विनय, गुणवानोनुं बहुमान

विहि ७.६ विधि, विधाता

वृत्तिसंखेप ३३.५ खावुं, पीवुं वगेरे भोगो ओछा करता जवा ते (सं. वृत्तिसंक्षेप)

वे- ९.७, ३०.३ अनुभववुं, भोगववुं (सं.वेद्)

वैयावृत्य ३३.७ सेवा, शुश्रूषा (सं.वैयावृत्त्य)

सझाय ३३.७ स्वाध्याय, धर्मचिंतन

स-बारीअ ६.३ द्वार - बारणां साथे ?

समकित ३७.६ सम्यक्त्व, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा

सरल ३२.३ निष्कपट (स्वभाव)

सरसति १.१ सरस्वती

सरिसा १२.१ सरखा, जेवा (सं.सदृश)

सरूप ३०.१ स्वरूप

सहिस ६.४ सहस्र, हजार

संकड १६.६ सांकडुं (सं.संकट)

संघाती ९.३ संगाथी, साथी (सं.)

संपज- ३९.२ नीपजवुं, थवुं (सं.संपद्य-)

संबल ८.५ भाथुं (सं.शंबल)

संलीनता ३३.५ शरीर अने इन्द्रियोनुं संगोपन, पोतामां रोकावुं ते (सं.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवर ३२.२ कर्मो आवतां - कर्मबंध थता अटकाववा ते

सामल २३.२ श्यामल, काळुं

सायर ३१.६ सागर

सार- २.२ सिद्ध करवुं, साधवुं

सुक्ख ३९.२ सुख

सुजन १०.२ स्वजन

सुरपति ७.२ इन्द्र (सं.)

सुहुणडा, सुहुणा ५.३, १२.१ स्वप्न, सोणां

सूझ- ३८.३ शुद्ध थवुं (सं.शुध्य-)

सोहिली ३६.३ सहेली, सरळताथी प्रास (सं.सुख+इल्ल)

सोविन ३५.१ सुवर्ण

सोवित्र ६.१० सुवर्णनुं (सं.सौवर्ण)

स्युं ३३.७ साथे, वडे (सं.समम्)

हय ३४.४ घोडो (सं.)

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org